



महिला स्वयं सहायता समूह की समृद्धि में सब्जी उत्पादन की भूमिका

हरप्रिया नायक*, एस. सिंह*, एस. बेहरा*, पी.आर. साहू*, बी.के. बांजा*, पी.के. तिवारी* और पी.के. साहू*

॥ बेहतर स्वास्थ्य और पोषण सुरक्षा हेतु गुणवत्तापूर्ण सब्जियों की बढ़ती मांग के कारण, खोर्धा जिले में महिला स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के लिए आय सृजन हेतु सब्जियों की खेती एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में उभरी है। कृषि विज्ञान केन्द्र-खोर्धा, भाकृअनुप-सीफा, भुबनेश्वर ने अनुसूचित जाति की महिला एसएचजी को जैविक पद्धति से सब्जियों की खेती के लिए तकनीकी रूप से सशक्त बनाया। इससे इन समूहों ने अच्छी-खासी आजीविका अर्जित की है। इस हस्तक्षेप के दौरान, तीन महिला स्वयं सहायता समूहों ने सक्रिय रूप से सब्जियों की खेती को अपनाया और उन्होंने 2 एकड़ भूमि के क्षेत्र में बेबीकॉर्न, भिंडी और खीरे की खेती से वर्ष 2023 (रबी सीजन) के दौरान 1,76,060 रुपये का शुद्ध लाभ प्राप्त किया। इस प्रयास ने जिले की अनुसूचित जाति की अन्य कृषक महिलाओं को भी आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के लिए प्रोत्साहित किया है। ॥

भारत जैसे विकासशील देश में सब्जियों की खेती ग्रामीण समुदाय की आजीविका में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह कुपोषण से निपटने, पूरक आय बढ़ाने और जीवन स्तर में सुधार करने के संभावित माध्यमों में से एक है। ग्रामीण कृषक महिला स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) को कौशल विकास और वैज्ञानिक विधि एवं तकनीकों के विषय में समुचित प्रशिक्षण प्रदान करके

सब्जियों की खेती को सबसे उपयुक्त उद्यम में बदला जा सकता है।

भारत, विश्व में सब्जी उत्पादन के मामले में दूसरे स्थान पर है। वर्ष 2023 के दौरान लगभग 212 मिलियन मीट्रिक टन सब्जियों का उत्पादन हुआ। देश के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रति व्यक्ति सब्जी की उपलब्धता अभी भी चिंताजनक रूप से कम है। ओडिशा के खोर्धा जिले में उच्च गुणवत्ता वाली सब्जियों की बढ़ती मांग के कारण, सब्जियों की जैविक खेती को बढ़ावा देना महिला स्वयं सहायता समूहों के लिए उभरती आय-सृजन गतिविधियों में से एक है।

खोर्धा जिले में अनुसूचित जाति (एससी) की महिलाओं की कुल आबादी 1,45,984 है। ग्रामीण क्षेत्र में ज्यादातर एससी महिलाएं खेत मजदूर के रूप में कार्यरत हैं। अनुसूचित जाति की महिलाओं के लिए अपने अधिकार प्राप्त करने, परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार करने, गरीबी और फसल उत्पादकता व उत्पादन दक्षता बढ़ाने हेतु आर्थिक सशक्तिकरण अत्यधिक आवश्यक है। इन महिलाओं में सब्जी और अन्य फसलों की जैविक खेती के बारे में जानकारी का काफी अभाव है। हाल ही के दिनों में यह पाया गया कि पारंपरिक पद्धति से सब्जी की खेती से

*कृषि विज्ञान केन्द्र, खोर्धा, भाकृअनुप-केन्द्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, भुबनेश्वर (ओडिशा)

संतोषजनक उपज और आय नहीं मिलती है। इसके अलावा कीट-पतंगों के प्रकोप से भी कुछ हद तक उपज की गुणवत्ता और बाजार मूल्य में गिरावट देखी गई है। इस लिहाज से यह माना जा सकता है कि पारंपरिक कृषि पद्धतियों में फसल विविधीकरण से महिला स्वयं सहायता समूहों में आर्थिक समृद्धि आ सकती है।

इन सभी कारकों को ध्यान में रखते हुए, अनुसूचित जाति के किसानों एवं कृषक महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में अनुसूचित जाति उप-योजना (एससीएसपी) के माध्यम से तकनीकी हस्तक्षेप किया गया है। एससीएसपी कार्यक्रम के तहत, कृषि विज्ञान केन्द्र (केवीके)-खोर्धा, भाकृअनुप-केन्द्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर ने एसएचजी की एससी महिलाओं को सक्षम बनाने के लिए 'सब्जी की खेती के लिए जैविक कृषि विधियों' विषय पर विभिन्न कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया। इसके परिणामस्वरूप खोर्धा जिले के बालीपटना ब्लॉक की तीन महिला स्वयं सहायता समूहों: श्रीरामपुर गांव की खुशी एसएचजी (11 सदस्य) तथा राजस गांव की बालुंकेश्वर एसएचजी (10 सदस्य) व अंबेडकर एसएचजी (12 सदस्य) ने अपनी आजीविका में सुधार के लिए सब्जियों की खेती को अपनाया। बेबीकॉर्न रबी मौसम में उगाई जाने वाली एक अत्यंत लाभकारी सब्जी फसल है। खुशी एसएचजी ने 1 एकड़ लीज भूमि में बेबीकॉर्न (एमएच-4 प्रजाति) की खेती की, जिसकी पट्टा राशि वर्ष 2023 के दौरान 7,000 रुपये थी। इस प्रयास में केवीके-खोर्धा द्वारा बेबीकॉर्न के बीज, उर्वरक और खेती के पैकेज तथा विधियों पर सम्पूर्ण तकनीकी सहायता प्रदान की गई। फसल अवधि के दौरान कुल व्यय 38,850 रुपये प्रति एकड़ रहा, जबकि कुल उपज 688 कि.ग्रा. प्रति एकड़ प्राप्त हुई। इस



बेबीकॉर्न का प्रसंस्करण

सफलता की कहानी



एसएचजी द्वारा भिंडी की खेती



भिंडी उपज



खीरे की खेती



खीरे की उपज

बालुंकेश्वर एसएचजी और अंबेडकर एसएचजी ने केवीके, खोर्धा के तकनीकी सहयोग से राजस गांव में अपने समुदाय की 1 एकड़ पट्टे की भूमि में जैविक खेती पद्धति से भिंडी (किस्म: राधिका) और खीरे (किस्म: एफ 1 हाइब्रिड) की खेती की शुरुआत की। इससे फसल का उत्पादन और महिला एसएचजी की आय में आशातीत वृद्धि हुई। इस प्रयास में, फसल के उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाने के लिए केवीके-खोर्धा द्वारा सब्जी के बीज, वर्मीकम्पोस्ट, जीवामृत, जैविक कीटनाशक जैसे आदान इन किसानों को दिया गया। केवीके द्वारा फसल अवधि के दौरान बारीकी से निगरानी रखी गई। फसल के अंत में, 0.5 एकड़ भूमि से भिंडी की औसत उपज 24 क्विंटल रही। इस दौरान कुल व्यय 18,650 रुपये का हुआ, जबकि सकल आय 96,000 रुपये रही। इस प्रकार इस एसएचजी ने भिंडी की खेती से 77,350 रुपये का शुद्ध लाभ अर्जित किया। वहीं, 0.5 एकड़ क्षेत्र में खीरे की औसत उपज 30 क्विंटल रही, जिसे इस एसएचजी की महिलाओं ने 30 रुपये प्रति कि.ग्रा. की दर से स्थानीय बाजार, बालाकाटी हाट एवं बनमालीपुर बाजार में बेचकर 90,000 रुपये की सकल आय प्राप्त की। इस प्रकार अंबेडकर एसएचजी के सदस्यों ने आधे एकड़ जमीन में खीरे की खेती से 68,760 रुपये का शुद्ध लाभ अर्जित किया।

प्रकार रबी सीजन के दौरान इस एसएचजी ने 68,800 रुपये की सकल आय अर्जित की, जिसमें शुद्ध लाभ 29,950 रुपये रहा।

उदाहरणों के माध्यम से यह देखा जा सकता है कि उपयुक्त किस्म के चयन और जैविक पद्धतियों के अनुपालन से महिला एसएचजी की आर्थिक स्थिति में वांछित सुधार आया। इस तरह के छोटे-छोटे तकनीकी हस्तक्षेप अनुसूचित जाति की महिलाओं की आर्थिक स्थिति में समग्र सुधार के लिए महत्वपूर्ण हैं। इनकी वजह से महिला स्वयं सहायता समूह आत्मनिर्भर बनीं और सब्जियों की खेती से अच्छी आजीविका अर्जित की। इस उद्यम में बहुत परिश्रम एवं लगन की आवश्यकता होती है, परन्तु इससे होने वाले फायदे कहीं अधिक होते हैं। इन कर्मठ



बेबीकॉर्न की पुंज

महिलाओं के इस प्रयास ने खोर्धा जिले की अनुसूचित जाति की अन्य ग्रामीण महिलाओं को भी सब्जियों की खेती के माध्यम से स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रोत्साहित किया है। उच्च पारिश्रमिक प्राप्त करने के अलावा, ऐसे उद्यम दैनिक आहार में ताजा सब्जियों को शामिल करके कृषक परिवारों के लिए बेहतर पोषण सुनिश्चित करते हैं।